संपादकीय

श्रम सुधार की पहल

भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने और अगले पांच वर्षों में उसे पांच लाख करोड़ डॉलर का आकार देने के मकसद से सरकार ने व्यापक श्रम सुधारों का अभियान शुरू कर दिया है। इसके लिए उसने 44 श्रम कानूनों को मिलाकर 4 श्रम संहिताएं बनाने का फैसला किया है। ये संहिताएं हैं- 1. न्यूनतम वेतन और कार्यगत सुरक्षा, 2. स्वास्थ्य एवं कार्यदशा, 3. सामाजिक सुरक्षा तथा 4. औद्योगिक संबंध। बुधवार को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने स्वास्थ्य और कार्यदशाओं से संबंधित बिल 'ऑक्यूपेशनल सेफ्टी, हेल्थ एंड वर्किंग कंडीशन बिल 2019' के मसौदे को मंजूरी दे दी। यह 13 श्रम कानूनों को मिलाकर बना है। न्यूनतम वेतन से संबंधित संहिता को एक हफ्ता पहले स्वीकृति दी जा चुकी है।

बाकी दो संहिताओं को शीघ्र मंजूरी दी जाएगी। जहां तक स्वास्थ्य और कार्यदशा से संबंधित बिल का सवाल है तो इससे 40 करोड़ वर्कर्स लाभान्वित होंगे। छोटे कारखानों में कामगारों को अक्सर बिना नियुक्ति पत्र के काम करना पड़ता है। यह रास्ता अब बंद होने वाला है। हर साल श्रमिकों के स्वास्थ्य की जांच जरूरी होगी। नियोक्ताओं के लिए भी प्रक्रिया आसान की गई है। रजिस्ट्रेशन, लाइसेंस और रिटर्न को आसान बनाया गया है। इनके लिए उन्हें अभी 10 से 21 तक फार्म भरने पड़ते हैं, लेकिन आगे एक-एक फार्म भरने से काम हो जाएगा। न्यूनतम वेतन से संबंधित संहिता पर श्रम एवं रोजगार मंत्री संतोष कुमार गंगवार का कहना है कि इसके जरिए देश भर के लगभग 30 करोड़ श्रमिकों को न्यूनतम वेतन पाने का अधिकार मिलेगा।

बिल में 178 रुपये का न्यूनतम वेतन सुनिश्चित किया गया है। जिन राज्यों में इससे ज्यादा की व्यवस्था है वहां वह जारी रहेगी। वेतन हर महीने की नियत तारीख पर मिलेगा। इस प्रावधान से मजदूरों का शोषण रुकेगा क्योंकि आज भी कुछ राज्यों में दैनिक मजदूरी 50, 60 या 100 रुपये पर अटकी पड़ी है। हालांकि कानूनों को एकरूप बनाने के फैसलों पर कई संगठनों ने सवाल भी उठाए हैं। नैशनल कैंपेन कमेटी फॉर कॉन्स्ट्रक्शन वर्कर्स का कहना है कि इससे भवन और अन्य निर्माण श्रमिक (बीओसीडब्ल्यू) एक्ट 1996 रद्द हो जाएगा, जिससे बीओसीडब्ल्यू बोर्ड बंद हो जाएंगे और लगभग चार करोड़ मजदूरों का पंजीकरण रद्द हो जाएगा।

भारतीय मजदूर संघ ने वेतन और सामाजिक सुरक्षा संबंधी लेबर कोड को ऐतिहासिक और क्रांतिकारी बताया है लेकिन औद्योगिक संबंधों से जुड़ी संहिता पर उसे गहरी आपत्ति है। उसका कहना है कि श्रम संगठनों के पदाधिकारियों के लिए पात्रता सरकार द्वारा तय किए जाने, हड़ताल करने का अधिकार सीमित करने, कर्मचारियों को एकतरफा तौर पर निकालने और एप्रेंटिस श्रमिकों को अलग करने जैसे प्रावधानों से श्रमिकों के अधिकारों में कटौती हुई है। अंततः श्रमिकों की संतुष्टि ही उन्हें उत्पादन में बेहतर योगदान की ओर ले जाएगी, लिहाजा सरकार को सभी संहिताओं में यथासंभव सुधार करके ही उन्हें कानून की शक्ल देनी चाहिए।

रेवेन्यू ग्रोथ के मोर्चे पर इन्फोसिस ने दी टीसीएस को मात

बेंगलुरु (आरएनएस)। इन्फोसिस ने चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के नतीजों से सबको चौंका दिया। देश की इस प्रतिष्ठित आईटी कंपनी ने अप्रैल-जून तिमाही में सालाना आधार पर 12.4 प्रतिशत की रेवेन्यू ग्रोथ हासिल की। कंपनी ने राजस्व में यह वृद्धि दर स्थिर मूल्य पर हासिल की। इस तगड़े प्रदर्शन से न्यू यॉर्क स्टॉक एक्सचेंज पर शुरुआती कारोबार में इन्फोसिस का शेयर 6 से 7 प्रतिशत मजबूत हो गया। शुक्रवार को जब इन्फोसिस के परिणाम आए तब तक घरेलू शेयर बाजार बंद हो चुका था।

गौरतलब है कि इन्फोसिस का ग्रोथ रेट पिछली तिमाही के मुकाबले ज्यादा है। उसने लंबे समय बाद अपनी सबसे करीबी प्रतिस्पर्धी कंपनी टाटा कंसल्टंसी सर्विसेज (टीसीएस) को पछाड़ दिया। टीसीएस ने भी इसी सप्ताह

जून में खत्म हुई तिमाही के रिजल्ट घोषित किए थे। तब उसने बताया था कि पिछली तिमाही के 12.7 प्रतिशत के मुकाबले जून तिमाही में उसका ग्रोथ रेट घटकर 10.6 प्रतिशत रहा गया।

इन्फोसिस के इस शानदार प्रदर्शन के आधार पर इस वर्ष उसकी राजस्व वृद्धि के अनुमान में सुधार की गुंजाइश दिख रही है। अब उसका राजस्व 8.5 से 10 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान जताया जा रहा है जो पहले 7.5 से 9.5 प्रतिशत था। कंपनी ने बताया कि उसने 2.7 अरब डॉलर की अब तक की सबसे बड़ी डील साइन की है। उसे डिजिटल बिजनस से प्राप्त रेवेन्यू 41 प्रतिशत बढ़ गया।

इन्फोसिस के सीईओ और एमडी सलिल पारेख ने कहा, हमने इस वर्ष की बड़ी मजबूत शुरुआत की है। उन्होंने आगे कहा, बड़े-बड़े समझौतों के प्रदर्शन महत्वपूर्ण रहे। कम्यूनिकेशन, एनर्जी, यूटिलिटीज और रिसॉर्सेज समेत हमारे कई सेक्टर्स दोहरे अंकों में बढ़ रहे हैं। हमें ग्रोथ के मद्देनजर कई चीजें दिख रही हैं। दरअसल, कंपनी का डिजिटल बिजनस रेवेन्यू लगातार दूसरी तिमाही में 1 अरब डॉलर से ज्यादा रहा है। कंपनी के कुल रेवेन्यू में इसकी हिस्सेदारी बढ़कर 35.7 प्रतिशत हो गई है।

अंशुला कांत बनीं वर्ल्ड बैंक की एमडी और सीएफओ

वॉशिंगटन (आरएनएस)। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) की मैनेजिंग डायरेक्टर अंशुला कांत को वर्ल्ड बैंक का मैनेजिंग डायरेक्टर और चीफ फाइनैंशल ऑफिसर (सीएफओ) नियुक्त किया गया है। वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष डेविड मल्पास ने शुक्रवार को यह घोषणा की। मल्पास ने कहा, मैनेजिंग डायरेक्टर और सीएफओ के रूप में कांत वर्ल्ड बैंक ग्रुप में फाइनैंशल और रिस्क मैनेजमेंट की जिम्मेदारी संभालेंगी। वह अध्यक्ष को रिपोर्ट करेंगी।

मल्पास ने कहा, अंशुला कांत को वर्ल्ड बैंक ग्रुप का मैनेजिंग डायरेक्टर और सीएफओ नियुक्त करते हुए मुझे काफी खुशी हो रही है। वह अपने साथ फाइनैंशल, बैंकिंग का 35 वर्ष का अनुभव ला रही हैं। ज्ञात हो कि अंशुला ने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वुमन से इकोनॉमिक ऑनर्स में ग्रेजुएशन किया है। उनका पोस्टग्रेजुएशन दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से हुआ है।

पेट्रोल, डीजल के भाव स्थिर, कच्चे तेल में रही तेजी

नईदिल्ली (आरएनएस)। पेट्रोल और डीजल के दाम में शनिवार को स्थिर रहे, लेकिन आगे वृद्धि की संभावना बनी हुई है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के भाव में इस सप्ताह मजबूती बनी रही है। बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड का दाम पिछले सप्ताह की तुलना में दो डॉलर प्रति बैरल से ज्यादा बढ़ गया है।

भारत में पेट्रोल और डीजल की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के भाव पर निर्भर करती हैं क्योंकि देश में तेल की खपत के एक बड़े हिस्से की पूर्ति आयात से ही होती है।

पिछले सप्ताह अंतर्राष्ट्रीय वायदा बाजार आईसीई पर ब्रेंट क्रूड के सितंबर अनुबंध का भाव 64.23 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ था जबकि इस सप्ताह के आखरी कारोबारी सत्र में शुक्रवार को 66.88 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ। सप्ताह के दौरान ब्रेंट क्रूड का भाव 67 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर तक उछला।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के अनुसार, दिल्ली, कोलकता, मुंबई और चेन्नई में शुक्रवार को पेट्रोल के दाम पूर्ववत क्रमशः

72.90 रुपये, 75.12 रुपये, 78.52 रुपये और 75.70 रुपये प्रति लीटर बने रहे। चारों महानगरों में डीजल के दाम भी यथावत क्रमशः 66.24 रुपये, 68.31 रुपये और 69.43 रुपये और 69.96 रुपये प्रति लीटर रहे।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में डीजल के दाम में इस सप्ताह 45 पैसे प्रति लीटर की कमी आई है जबकि पिछले सप्ताह की वृद्धि के बाद पेट्रोल के भाव में महज छह पैसे की कटौती की गई है।

पिछले सप्ताह शुक्रवार को लोकसभा में आम बजट 2019-20 पेश करते हुए वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क और उपकर में एक-एक रुपये की वृद्धि की घोषणा की थी, जिसके अगले दिन शनिवार को पूरे देश में दोनों वाहन ईंधनों के दाम में तकरीबन ढाई रुपये प्रति लीटर की वृद्धि हो गई थी।

टीवीएस ने लॉन्च की देश की पहली एथेनॉल से चलने वाली बाइक

नई दिल्ली (आरएनएस)। दोपहिया वाहन बनाने वाली प्रमुख निर्माता टीवीएस मोटर कंपनी ने देश की पहली एथेनॉल आधारित मोटरसाइकल-टीवीएस अपाचे आरटीआर 200 एफआईई 100 लॉन्च करने की घोषणा की है जिसकी कीमत 1.20 लाख रुपये है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत और कंपनी के अध्यक्ष वेनु श्रीनिवासन ने शुक्रवार को यहां इस मोटरसाइकिल को लॉंच किया। कंपनी ने ऑटो एक्सपो 2018 में सबसे पहले टीवीएस अपाचे 200 4वी एथेनॉल अवधारणा को प्रदर्शित किया था। अपाचे कंपनी का प्रमुख ब्रांड है जिसके दुनिया भर में 35 लाख से अधिक उपभोक्ता हैं। इस मौके पर श्रीनिवासन ने कहा कि आज दोपहिया उद्योग इलेक्ट्रिक, हाइब्रिड वाहनों एवं वैकल्पिक ईंधन के माध्यम से परिवहन के हरित एवं स्थायी भावी समाधानों की ओर रुख कर रहा है। टीवीएस का मानना है कि एथेनॉल आधारित उत्पाद उपभोक्ताओं के लिए अच्छा विकल्प हैं। वाहनों में ईंधन के रूप में एथेनॉल का इस्तेमाल आसान होने तथा पर्यावरण पर इसके सकारात्मक प्रभावों के मद्देनज़र उपभोक्ता को वाहन के परफोर्मेन्स और कुल लागत में किसी तरह का समझौता नहीं करना पड़ता है।

सिंडिकेट बैंक ने एमसीएलआर में 0.05 प्रतिशत की कटौती की

नई दिल्ली (आरएनएस)। सार्वजनिक क्षेत्र के सिंडिकेट बैंक ने विभिन्न परिपच्ता अवधि के लिए कोष की सीमांत लागत आधारित ऋण ब्याज दर (एमसीएलआर) में 0.05 प्रतिशत की कटौती की है। यह कटौती 15 जून से प्रभावी है। बैंक ने शेयर बाजारों को भेजी सूचना में कहा कि एक साल की बेंचमार्क एमसीएलआर को घटाकर 8.60 प्रतिशत किया गया है। अभी तक यह दर 8.65 प्रतिशत थी। एक दिन, एक, तीन और छह महीने की एमसीएलआर को 0.05 प्रतिशत घटाकर क्रमशः 8.15 प्रतिशत, 8.25 प्रतिशत, 8.45 प्रतिशत और 8.55 प्रतिशत किया गया है। बैंक ने अपनी आधार दर को 9.50 प्रतिशत पर कायम रखा है। वहीं बेंचमार्क प्रमुख ऋण दर (बीपीएलआर) को भी 13.85 प्रतिशत पर यथावत रखा गया है।

आज का राशिफल

मेषः- आज का दिन मिश्रित फलकारक है। बड़े अधिकारी से अनबन नुकसान दायक रहेगी। क्रोध पर नियंत्रण बनाए रखें। नए संबंध से भाग्य चमकेगा।

वृषभः- आप यदि व्यापारी हैं तो आज अनावश्यक अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सरकारी नौकर हैं तो वरिष्ठ अधिकारी का कोप भाजन बनना पड़ सकता है।

मिथुनः- आज दिन में छुटपुट लाभ की संभावना है। नौकरी-व्यवसाय से जुड़े कुछ मुद्दे हल हो जाएंगे।

कर्कः- किसी भी विरोधी की आलोचना की ओर ध्यान न देकर अपना काम करते रहें। आगे चलकर सफलता आपके कदम चूमेगी।

सिंहः- आर्थिक मसलों में सोच समझकर किए गए निवेश अत्यधिक फायदा दे सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपको थोड़ा सोच समझकर ही कोई भी फैसला लेना चाहिए।

कन्याः- आज कर्मोद्योग में तत्परता से लाभ होगा। पारिवारिक मंगल कार्यों की खुशी होगी। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा।

तुलाः- आज व्यावसायिक क्षेत्र में मन के अनुकूल लाभ होने का हर्ष होगा। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। व्यवसाय परिवर्तन की योजना बन रही है।

वृश्चिकः- आज का दिन कुछ विशेष कर दिखाने की उधेड़बुन में व्यतीत होगा। अधिकारी वर्ग से अच्छी साठ-गांठ बनेगी। किसी सरकारी संस्था से दूरगामी लाभ की पृष्ठभूमि भी आज ही बनेगी।

धनुः- रुका धन आश्चर्यजनक रूप से प्राप्त हो जाएगा। इससे आज आपका विश्वास, धर्म एवं आध्यात्म में बढ़ेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें, अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ मिलेगा।

मकरः- आज कार्यक्षेत्र में अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन हो सकती है। दाम्पत्य जीवन में सरसता बनी रहेगी। पराक्रम वृद्धि से शत्रुओं का मनोबल टूटेगा। अचानक अतिथियों के आगमन से व्यय भार बढ़ेगा।

कुंभः- आज नए व्यापार के लिए नई योजनाएं बनेंगी। ऋण भार में कमी होगी। संतान पक्ष का पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होगा।

मीनः- नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन और सफलता मिलने की उम्मीद है। आपकी पूंजी में भी बढ़ोतरी होगी, लेकिन शुरुआती निवेश में आपको कुछ सावधान रहने की आवश्यकता है।

भारतीय महिला हाकी टीम के कोचिंग शिविर के लिये 33 खिलाड़ियों का ऐलान

नई दिल्ली (आरएनएस)। हाकी इंडिया ने बेंगलुरू के साइ केंद्र में लगने वाले भारतीय महिला टीम के कोचिंग शिविर के लिये शनिवार को 33 संभावित खिलाड़ियों के नाम का ऐलान कर दिया । खिलाड़ियों को चार सप्ताह के शिविर के लिये कोच शोर्ड मारिन को रिपोर्ट करने को कहा गया है । शिविर 11 अगस्त तक चलेगा । इसके बाद टीम तोक्यो ओलंपिक 2020 का टेस्ट टूर्नामेंट खेलने जापान जायेगी जिसमें भारत और

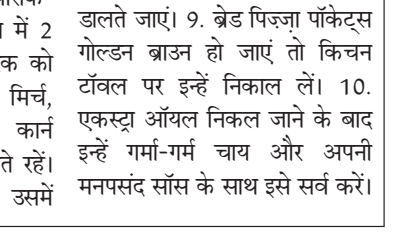

जापान के अलावा आस्ट्रेलिया और चीन भी भाग लेंगे । कोच मारिन ने कहा,''हम एफआईएच महिला सीरिज फाइनल हिरोशिमा 2019 में अपने प्रदर्शन की समीक्षा इस शिविर में करेंगे । इसके अलावा यह पता किया जायेगा कि कहां सुधार की जरूरत है ।'' उन्होंने कहा ,'' आप जीतते हैं तो सब कुछ अच्छा लगता है लेकिन प्रदर्शन की लगातार समीक्षा करते रहना जरूरी है । हमें कुछ पहलुओंपर मेहनत करने की जरूरत है ।'' कोच ने कहा ,'' हमारा लक्ष्य आस्ट्रेलिया, चीन और जापान जैसी टीमों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करना है । मैं देखना चाहता हूं कि हम आस्ट्रेलिया के खिलाफ कैसे खेलते हैं । इसके लिये फिटनेस का स्तर भी बेहतरीन बनाये रखना जरूरी है ।'' संभावित खिलाड़ी : गोलकीपर : सविता, रजनी ई , बिच्चू देवी के डिफेंडर : दीप ग्रेस इक्का ,रीना खोखार , सुमन देवी , सुनीता लाकड़ा, सलीमा टेटे,मनप्रीत कौर, गुरजीत कौर, रश्मिता मिंज, महिमा चौधरी और निशा । मिडफील्डर : निक्की प्रधान,मोनिका , नेहा गोयल, लिलिमा मिंज, सुशीला चानू, चेतना, रीत, अनुजा सिंह, करिश्मा यादव और सोनिका ।

वीरेंद्र सहवाग की पत्नी के साथ 4.5 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी!

नईदिल्ली (आरएनएस)। भारतीय टीम के पूर्व क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग की पत्नी आरती धोखाधड़ी की शिकार हुई हैं। वीरेंद्र सहवाग की पत्नी आरती ने अपने बिजनेस पार्टनर के खिलाफ दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। आरती व सहवाग ने आरोप लगाया है कि उनके नाम और दस्तखत का गलत इस्तेमाल करके साढ़े चार करोड़ रुपये का लोन लिया गया है। आरती सहवाग के आरोप के मुताबिक उन्होंने दिल्ली के अशोक विहार में रोहित कक्कड़ नाम के शख्स के साथ पार्टनरशिप की। इसके बाद रोहित कक्कड़ और उसके कुछ करीबियों ने आरती सहवाग की जानकारी के बिना एक दूसरी बिल्डर फर्म से संपर्क किया। इन लोगों ने उस फर्म को बताया कि आरती और वीरेंद्र सहवाग इनके साथ जुड़े हैं।

आरोप के मुताबिक नाम और दस्तखत का गलत इस्तेमाल उस फर्म से साढ़े चार करोड़ का लोन ले लिया गया। आरती सहवाग का कहना है कि जब वो रोहित कक्कड़

की फर्म में पार्टनर बनी थीं तब उन्होंने तय किया था बिना उनकी इजाजत के कोई काम नहीं होगा। फिलहाल दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने सभी आरोपियों के खिलाफ धारा 420 में केस दर्ज कर लिया है।

ब्रेड पिज़्ज़ा बनाने की विधि...

सामग्रीः

वाइट ब्रेड स्लाइस - 8, शिमला मिर्च - 2 टेबलस्पून, गाजर - 1 टेबलस्पून, टमाटर - 1, स्वीट कॉर्न - 1 टेबलस्पून, मोज़ेरीला चीज़ - 2 टेबलस्पून, टमैटो सॉस - 2 टेबलस्पून, ऑरिगेनो हर्ब - 1 टीस्पून, नमक - स्वादानुसार, अदरक - 1 टीस्पून, मैदा - 4 से 5 टेबलस्पून, तेल - तलने के लिए

विधिः

1. सबसे पहले शिमला मिर्च,गाजर और टमाटर को बारीक-बारीक काट लें। 2. एक पैन में 2 चम्मच तेल गर्म करके अदरक को भूल लें, फिर उसमें शिमला मिर्च, गाजर, टमाटर और स्वीट कार्न डालकर 2 से 3 मिनट चलाते रहें। 3. गैस बंद करने के बाद उसमें टोमॉटो सॉस, ऑरिगेनो और नमक डालकर मटीरियल को ठंडा होने दें। 4. स्टफिंग के ठंडा होने पर उसमें चीज डालकर एक बार अच्छी तरह हिला लें। 5. उसके बाद ब्रेड के किनारों को काट लें। ब्रेड को बेलन की मदद से पतला बेल लें। 6. अब तैयार स्टफिंग का एक से डेढ़ चम्मच ब्रेड में रखकर सभी तरफ से ब्रेड को पानी या मैदे के घोल से सील कर दें। 7. इस तरह से सारी ब्रेड की पॉकेट्स तैयार कर लें। 8. अब एक-एक करके पॉकेट्स को मैदे के घोल में डिप करके तेल में तलने के लिए डालते जाएं। 9. ब्रेड पिज़्ज़ा पॉकेट्स गोल्डन ब्राउन हो जाएं तो किचन टॉवल पर इन्हें निकाल लें। 10. एकस्ट्रा ऑयल निकल जाने के बाद इन्हें गर्मा-गर्म चाय और अपनी मनपसंद सॉस के साथ इसे सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य- 24

बाएं से दाएं
1. संघर्ष, दौड़धूप (उर्दू.) 5. सुपुत्र, लायक पुत्र 7. ताकतवर, बलशाली 9. खुशबू, सुरभि, सुगंध 10. अकारण, व्यर्थ, बेवजह 12. गर्म तेल आदि में खाद्य वस्तु छोड़कर पकाना 13. यात्रा 15. मृत, जो मर गया हो 16. छोटे कद का, वामन, बौना 18. सांप का सिर, गुण, कला, कौशल 20. निरुत्तर, बेमिसाल 23. गोल हरे दानों वाला एक प्रसिद्ध पौधा, या इस पौधे की फली 24.माता, जननी 25. संतान, औलाद 26. अधीन, अधीनस्थ, कर्मचारी 27. चिड़िया, खग तरफदार।

ऊपर से नीचे
1.पानी में डूबा हुआ, जल प्लावित 2. पाकेटमार, जेब काटने वाला 3. समाधान, खेत जोतने का यंत्र 4. औषधालय 6. युक्ति, उपाय 8. गीला, तर, भीगा हुआ 11. झटके से मुंह से आवाज के साथ हवा बाहर आना, बलगम आदि का बाहर आना 14. तुरंत, झटपट 15. स्त्री, नारी, अबला 17. एक और एक चौथाई 19. आदमखोर 21. दुनिया, संसार, जग 22. वर्ष की छः ऋतुओं में एक ऋतु जिसमें मौसम सुहावना रहता है 23. बुद्धि, दिमाग।

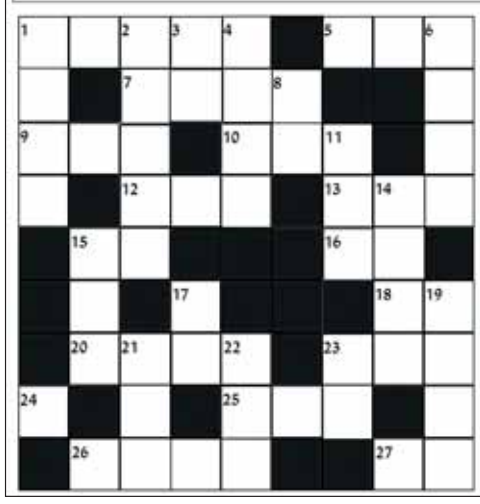

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 23 का हल

पी	चि	दं	ब	र	म			स
ट		भ	ला	ई		अ	स	म
ना	म			स	मा	धि		झ
	ज		बे		न	का	र	ना
बा	बू		आ	य	क	र		
	र	की	ब				प्र	था
ज			रू	प	क		ज	न
हा		पा		ना	म	ची	न	
ज	हां	प	ना	ह		ता	न	ना

सू-दोकू- 24

9		8		1		7		
4		6			7		5	
	3			6		8		9
		3			1		6	
5			6			9		
		9		5			3	
3			7		9			1
	5			2		3	9	
1		4			8		7	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.23 का हल

7	5	6	4	1	2	8	3	9
3	4	8	6	7	9	2	1	5
1	2	9	5	3	8	7	4	6
2	8	1	9	5	6	4	7	3
6	9	7	2	4	3	5	8	1
5	3	4	7	8	1	9	6	2
8	7	2	1	6	5	3	9	4
4	6	5	3	9	7	1	2	8
9	1	3	8	2	4	6	5	7